IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 22, Issue 5, Ver. II (May 2017) PP 64-66
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

''भारतीय राजनीति में राजनीतिक दलों की भूमिका ''

डॉ0 जितेन्द्र बहादुर सिंह
एसो0प्रो0 – राजनीति विज्ञान
पं0 राम लखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
आलापुर, अम्बेडकरनगर, उ0प्र0

भूमिका

संसदीय लोकतंत्र के लिए विभिन्न राजनीतिक दल आवश्यक है। राजनीतिक दल नागरिकों का संगठित समूह है, जो एक सी विचारधारा रखते हैं। ये अपनी नीतियों और कार्यक्रामों के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। राजनीतिक दल एक शक्ति के रूप में कार्य करते हैं और सदैव शक्ति प्राप्त करने उसे बनाये रखने का प्रयास करते रहते हैं। राजनीतिक दल आधुनिक समय में जीवन की एक आवश्यकता बन गया है। अप्रत्यक्ष प्रजातंत्र जहॉ जनता के प्रतिनिधि ही शासन की बागडोर सम्भालते हैं, वहॉ राजनीतिक दल के बिना काम चल ही नहीं सकता। निरंकुश एकतन्त्रात्मक शासन में राजनीतिक दल का तो और भी महत्व बढ़ जाता है। साम्यवादी राज्यों में जहॉ दल और शासन में कोई भेद नहीं, वहॉ राजनीतिक दल ही सर्वेसर्वा हैं। प्रजातंत्र का राज्य कैसा भी हो, राजनीतिक दल जीवन रक्त के समान है। राजनीतिक दलों को सरकार का चौथा अंग कहा जा सकता है।

विश्व के अनेक विद्वानों ने राजनीतिक दल की परिभाषा अपने अपने हिसाब से भी है जो इस प्रकार है – **हयब्बूर के शब्दों में, '' प्रजातंत्रात्मक यंत्र के चालन में राजनीतिक दल ईंधन के समान है।''**

मुनरी के अनुसार, '' प्रजातंत्रात्मक शासन दलीय शासन का दूसरा रूप हैं। विश्व इतिहास में कभी भी ऐसी स्वतंत्र सरकार नहीं रही जिसमें राजनीतिक दल का अस्तित्व न हो।''

ब्राइस का मत है, '' राजनीतिक दल अनिवार्य है। कोई भी बड़ा देश उसके बिना नहीं रह सकता। किसी व्यक्ति ने यह नही दिखाया हैं कि लोकतंत्र उसके बिना कैसे चल सकता है। आज के युग में राजनीतिक दल का प्रत्येक देश में चाहे वह छोटा हो या बड़ा, राजतंत्र हो या अधिनायतंत्र, बड़ा महत्व हैं। प्रत्येक राज्य में सरकार किसी न किसी दल की रहती ही हैं।

राजनीतिक दलों का महत्व या उपयोगिता निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट की जा सकती हैं –

1. **राजनीतिक दल जनतांत्रिक सरकार की कार्यकारिता के लिए अपरिहार्य है।**
   एडमण्ड बर्क के अनुसार, '' दलीय प्रणाली चाहे पूर्ण रूप से भले के लिए हो अथवा बुरे के लिए, लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के लिए अनिवार्य है। ''

राजनीतिक दल राष्ट्रीय हित को व्यवस्थित एवं तर्कपूर्ण नीति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, उसके पक्ष में लोकमत का निर्माण करते हैं, लोकतांत्रिक चुनाव प्रणाली को मूर्तरूप देते हैं और शासन के संचालन के साथ ही उसकी निरंकुशता को नियंत्रित करते हैं और लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं, अधिकारों एवं मूल्यों की रक्षा करते हैं।

2. **मैकाइवर का कथन है कि, '' दलीय संगठन के बिना किसी सिद्धान्त का व्यवस्थित एवं एकीभूत प्रकाषन नहीं हो सकता, किसी भी नीति का क्रमबद्ध विकास नहीं हो सकता संसदीय चुनावों की वैज्ञानिक व्यवस्था नहीं हो सकती और न ऐसी मान्य संस्थाओं की व्यवस्था ही हो सकती है जिनके द्वारा कोई भी दल शांति प्राप्त करता है तथा उसे स्थिर रखता है।''**

भारतीय परिपेक्ष में राजनीतिक दलों की भूमिका को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

1. **लोकमत का निर्माण करते हैं –** समाज के लिए विभिन्न एवं परस्पर विरोधी विचाररों को दलों द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। वे बिखरे एवं अस्पष्ट एवं व्यवस्थित करते हैं तथा जनमत निर्माझा में योग देते हैं। सामाजिक जीवन की विभिन्न उलझी हुई समस्याओं में से प्रमुख समस्याओं को वे जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।
   भारत एक विशाल संस्कृति वाला देश है जहॉ पर अलग–अलग धार्मिक एवं सामाजिक विचारधारा के लोग निवास करते हैं। परिस्थिति में इनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा इनके धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू से

जुड़ा हुआ है। जहां तक प्रश्न है राजनीतिक दल का तो हर एक राजनीतिक दल निश्चित रूप से उनके बीच ऐसे समन्वयक का काम करता है की यह सभी एक धारा में जोड़ा
जाए। भारत के परिपेक्ष में देखा जाए तो हम पाते हैं कि उत्तर से लेकर दक्षिण तक तथा पूर्व से पश्चिम तक व्यापक भिन्नता है। ऐसी परिस्थिति में देश को एकता के सूत्र में बांधने का काम राजनीतिक दल ही करता है। वह लोकमत तैयार करने के लिए इस प्रकार की नीतियां बनाता है कि सभी जनता को एक साथ लेकर चला जाय। हम भारतीय परिपेक्ष में देखें तो पाते हैं कि दो राष्ट्रीय दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं भारतीय जनता पार्टी इसी प्रकार का कार्य कर रही है।

2. **राजनीतिक षिक्षा प्रदान करते हैं –** दल जनता को राजनीतिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। लॉवेल के अनुसार,''दल विचारों के दलाल हैं। विभिन्न राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं के संबंध में प्रत्येक दल द्वारा पक्ष एवं विपक्ष में विचार प्रस्तुत किये जाते हैं अपने–अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं, निर्वाचनों में जन सभायें आयोजित की जाती हैं। इससे लोगों में राजनीतिक शिक्षा एवं चेतना का प्रसार होता है। जनता सदैव सजग एवं जागरूक रहती है।
भारतीय परिपेक्ष में राजनीतिक शिक्षा का अर्थ है कि आम जनता को अपने अपने मुद्दों तथा उद्देश्यों के लिए राजनीति रूप से तैयार करना। हर राजनीतिक दल एक ऐसे संगठन के रूप में काम करती है जिसमें कई दबाव समूह होते हैं जोकि राजनीतिक दलों को सामाजिक आधार प्रदान करते हैं। राजनीतिक दल इन्हीं दबाव समूह के माध्यम से समाज में अपने पैठ बनाता है तथा समाज को अपने मुद्दों के अनुरूप डालने की कोशिश करता हैं व्यवहारिक तौर पर देखा जाए तो जनता को राजनीतिक शिक्षा दबाव समूह के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप में की जाती है। भारत के हर राष्ट्रीय दल तथा मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय दल के पास विधिवत रूप से अपना एक दबाव समूह है जो कि उसे सामाजिक आधार प्रदान करता है तथा लोगों को राजनीतिक शिक्षा देने में उनकी मदद करता है।

3. **चनावों में सहायता प्रदान करते हैं –** दलों के कारण मतदाताओं को मतदान में काफी सुविधा रहती है। निर्वाचनों में दलों द्वारा अपने प्रत्याशी बड़े किये जाते हैं। उनके पक्ष में प्रचार करते हैं, आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं। शासन सत्ता पर अपना अधिकार प्राप्त करते हैं। वस्तुतः लोकतांत्रिक राज्यों में राजनीतिक दलों के बिना चुनाव लड़ना एवं विजय प्राप्त करना कठिन कार्य है।
चुनाव लड़ना एक बहुत बड़ी प्रक्रिया है। जिसमें राजनीतिक दलों को आम जनता के बीच अपने विभिन्न मुद्दों को लेकर जाना पड़ता है। यदि हम राजनीतिक दलों की बात करें तो राजनीतिक दल चुनाव में जनता को एक व्यवस्थित विकल्प प्रदान करते हैं। राजनीतिक दल ना हो तो जनता के पास वह विकल्प नहीं होगा जो उसे संगठनात्मक रूप से राजनीतिक दृष्टि प्रदान करता है। ऐसे में राजनीतिक दल जनता के सामने एक संगठित विकल्प उत्पन्न करते हैं ताकि वे चुनाव में एक विकल्पों के आधार पर अपने राजनीतिक शक्ति का प्रयोग कर सकें तथा सत्ता में साझेदारी करा सके। राजनीतिक दल ही स्वस्थ विकल्प उपलब्ध कराते हैं क्योंकि अगर भारत जैसे देश में राजनीतिक द लना हो तो सरकार बनाना लगभग असंभव सा हो जाएगा।

4. **शासन के संचालन में सहयोग प्रदान करते हैं –** राजनीतिक दल चुनाव में बहुमत प्राप्त करके सरकार का निर्माण करते हैं। संसदीय एवं अध्यक्षात्मक दोनों प्रकार की शासन प्रणालियों में सरकार का निर्माण तथा शासन व्यवस्था का संचालन राजनीतिक दलों के आधार पर ही किया जाता है।
भारत एक ऐसा लोकतांत्रिक देश है जहॉ पर कोई भी राजनीतिक दल को उससे सरकार चलाने के लिए या सरकार बनाने के लिए बहुत बड़े जनसमर्थन की आवश्यकता होती है। छोटे स्तर पर जनसमर्थन लेकर या भारत के क्षेत्रीय या कम वर्ग का साथ लेकर कोई भी सरकार नहीं बना सकता । अतः हमारे राजनीतिक दल इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि हर स्तर पर ऐसी नीतियों का निर्माण किया जाए जिससे राष्ट्रीय स्तर पर दल की पहचान स्थापित करे तथा उसके साथ अधिक से अधिक लोग आ सके। जब तक देश के हर स्तर के लोगों की राजनीतिक दल में भागीदारी नहीं होगी तब तक शासन एवं सत्ता का संचालन पर्याप्त रूप से नहीं हो सकेगा। इसलिए हर राजनीतिक दलिया प्राप्त करती है कि वह अधिक से अधिक लोगों को अपनी विचारधारा के साथ जोड़े जिससे सरकार आसानी से चल सके।

5. **सरकार पर नियंत्रण रखते हैं** – विपक्षी दलों का उद्देश्य सरकारी नीतियों की स्वस्थ आलोचना करके जनमत को अपने पक्ष में करना होता है। विपक्ष के कार्यकलापों से जनता को यह ज्ञात होता है कि शासन – नीति की रूपरेखा क्या है। जब जनता शासन की वैकल्पिक नीति का समर्थन देने लगती है तब विरोधी दल शासन की बागडोर सम्भालने में सक्षम हो जाता है।

6. **जनता और सरकार के मध्य सेतु का कार्य करते हैं –** सत्तारूढ़ दल और विरोधी दलों का सम्पर्क जनता से निरंतर बना रहता है विरोधी दल जनता की कठिनाइयों और मांगों को सरकार के सामने रखते हैं। एक राजनीतिक दल का मुख्य कार्य है कि वह विचारों का आदान–प्रदान एवं सम्पर्क का रास्ता खुला रखे। इस प्रकार सरकार सार्वजनिक कल्याण के लिए एंव लोकमत के अनुसार चलती है। जनता तथा सरकार के बीच समन्वय में राजनीतिक दलों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। भारत में सरकार की बात की जाए तो यहां दो तरह की कार्यपालिका है। एक स्थाई कार्यपालिका जिसका चयन होता है तथा दूसरा और अस्थाई कार्यपालिका चुनाव के द्वारा चयन होता है। इसी कार्यपालिका में राजनीतिक दल की महत्वपूर्ण एवं शक्ति मिली है। जनता चयनित कार्यपालिका मे ंदखल नहीं दे सकती है। अतः जनता राजनीतिक दलों के माध्यम से अपने मुद्दों तथा मांगों को कार्यपालिका तक पहुंचाने का कार्य करती है। भारतीय संविधान में भी स्पष्ट रूप से जनता की चुनी हुई कार्यपालिका की सबसे अधिक शक्ति प्रदान की गई है। क्योंकि उन्हें ही सरकार बनाने तथा सरकार चलाने की शक्ति मिली है। ऐसे में राजनीतिक दलों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि जनता की हर मांग को वह परिष्कृत सरकार तक पहुंचाने का कार्य करती है तथा उसे व्यवस्थित रूप में बदलने का कार्य करती है।
7. **शासन के विभिन्न अंगों में समन्वय बनाये रखते हैं –** राजनीतिक दल शाससन के विभिन्न अंगों मे सामंजस्य स्थापित करते हैं। संसदीय शासन प्रणाली में व्यवस्थापिका एवं कार्यपालिका में दलीय अनुशासन एवं कार्यक्रम के फलस्वरूप अभिन्न संबंध बना रहता है अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली में शासन के विभिन्न अंगों में पृथक्करण के कारण राजनीतिक दल ही शासन संचालन के कार्य को सुगभ बनाते हैं। दल व्यवस्था के कारण ही सांविधानिक कठोरता वांछित लचीलेपन में बदल जाती है।

   भारतीय स्तर पर देखा जाए तो यहां की राजनीतिक व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था के रूप में होनी चाहिए जो प्रशासनिक स्तर से लेकर व्यावहारके स्तर पर सबको समायोजित कर सके। भारतीय परिवेश में ग्राम, कस्बा, शहर तथा महानगर जैसे कई इकाई है। जहां पर प्रशासनिक यकरूपता की आवश्यकता है। हमने संघवादी स्वरूप में इन सबके लिए अलग–अलग प्रशासनिक इकाई बना दी है। लेकिन प्रशासनिक इकाइयों को ऊपर से नीचे तक तथा कठोरतम एवं लचीलापन के रूप में समायोजित करने के लिए राजनीतिक दल ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

निष्कर्ष :– निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि, भारत जैसे विशाल देश यदि लोकतंत्र जीवित है तो उसके पीछे राजनीतिक दलों का बहुत बड़ा योगदान है। भारतीय राजनीति में बहुदलीय व्यवस्था के कारणों से ही यहां के लोगों को सत्ता में साझेदारी के पर्याप्त अवसर मिलते है। लोकतांत्रिक समस्याओं का समाधान बेहतर तथा आसानी से हो जाता है। यदि ऐसा नहीं होता भारत जैसे देश में विखंडनकारी शक्तियां हावी हो जाती जिससे भारत के टुकड़े–टुकड़े होने की संभावना बढ़ जाती। विचारधारा के स्तर पर भी देखें थे हम पाते हैं कि भारत में अनेक विचारधाराओं के लोग निवास करते हैं। जिनके पूर्ण समायोजन में राजनीतिक दलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अलग–अलग लोगों की अलग –अलग विचारधाराओं को क्षेत्रीय या राष्टीय दल अपनी विचारधारा में समाहित कर लेती है। इसलिए भारतीय राजनीति में वैचारिक विभिन्न्ता को कम करने के राजनीतिक दलों का होना अतिआवश्यक है। भारत के संघीय राज्य है जिसके संघीय स्वरूप यथावत रखने में राजनीतिक दलों की भूमिका महत्वपूर्ण है। राजनीतिक दल हीं सत्ता के हर स्तरीय विभाजन को अपने में समा लेती है।

सन्दर्भ

1. गाबा, ओ0पी0, भारतीय राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा, नेशनल पब्लिषिंग हाउस नई दिल्ली, 20001
2. गाबा ओ0पी0, राजनीतिक सिद्धांतनेषनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, 2010।
3. पुखराज, राजनीति विज्ञान, साहित्य भवन पब्लिशिंग, आगरा, 2008।
4. जौहरी जे0सी0, तुलनात्मक राजनीतिविज्ञान, स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2009।
5. फारिया, बी0एल0, राजनीति विज्ञान, साहित्य भवन पब्लिशिंग, आगरा, 2008।
6. लक्ष्मीकांत एम भारतीय राजव्यवस्था, टी..एम.एच. प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014।
7- शर्मा, प्रो0पी0डी0, लोकतांत्रिक भारत में लोक प्रकाषन, साहित्य घर प्रकाषन, नई दिल्ली 2014।